# रंगभेद विरोधी आंदोलन के नायक: नेल्सन मंडेला

20वीं शताब्दी की महान हस्तियों में से एक नेल्सन मंडेला ने हाल ही में इस दुनिया को अलविदा कह दिया। अपने जीवनकाल में नेल्सन मंडेला को लाखों लोगों का प्यार मिला जो कि इतिहास में शायद ही किसी राजनीतिक हस्ती को मिला हो। अपने देश को रंगभेद से मुक्त करने के लिए उन्होंने शांतिपूर्ण आंदोलन किया जो कि 1990 में उनके जेल से छूट जाने और 1994 के लोकतांत्रिक चुनाव में उनके दक्षिण अफ्रीका के पहले अश्वेत राष्ट्रपति बनने के बाद समाप्त हुआ । अफ्रीकी गांधी कहे जाने वाले मदीबा (मंडेला को इस नाम से भी पुकारा जाता था) को दुनियाभर में प्यार से मंडेला के नाम से बुलाया जाता था। उन्होंने हमेशा ही महात्मा गांधी के 'सत्य और अहिंसा' के सिद्धांतों की प्रशंसा की तथा उनका अनुसरण किया।

ईस्टर्न केप में ट्रेनस्की में पूर्वी लंदन के 120 मील पूर्वोत्तर उम्टाटा के निकट म्वेजू में मंडेला का जन्म थेंपू शाही परिवार में हुआ था। भले ही, उनके परिवार के आस-पास के इलाके कुनु प्रस्थान करने के बाद पांच वर्ष की उम्र में उनका पहला काम चरवाहा का था लेकिन अपनी उस छोटी सी दुनिया में वह एक रईस व्यक्ति थे। सात वर्ष की उम्र में उन्होंने स्कूल जाना शुरू किया तथा ऐसा करने वाले वे अपने परिवार के पहले व्यक्ति बने। स्कूल के पहले ही दिन उनका नाम नेल्सन रखा गया क्योंकि उस वक्त प्रत्येक बच्चे का स्थानीय नाम के साथ-साथ अंग्रेज़ी नाम होना भी ज़रूरी था।

परिवार की परंपरा के अनुसार उन्हें भावी राजा, सबाता का सलाहकार बनने के लायक बनाया गया। उम्टाटा से 25 मील दूर दक्षिण-पश्चिम में उन्हें मैथेडिस्ट मिशन स्कूल, क्लार्कबरी भेजा गया। 19 वर्ष की आयु में उम्टाटा से 175 मील दूर दक्षिण-पश्चिम में फोर्ट ब्यूफॉर्ट में उन्हें एक दूसरे मेथोडिस्ट स्कूल हेल्डटाउन भेजा गया। उसके बाद उन्हें पास ही के फोर्ट हेअर यूनिवर्सिटी कॉलेज भेजा गया जो उस समय दक्षिण अफ्रीका में अश्वेत लोगों के लिए एकमात्र विश्वविद्यालय था। मंडेला, विश्वविद्यालय जाकर बेहद खुश थे, खासकर मुक्केबाज़ी और एथलेटिक्स को लेकर तथा वे लोक सेवा और इंटरप्रेटर बनना चाहते थे। लेकिन उनका यह सपना तब चकनाचूर हो गया जब 1940 में कॉलेज में उनके दूसरे वर्ष के दौरान उन्हें वहां से निकाल दिया गया क्योंकि छात्र प्रतिनिधि परिषद के सदस्य होने के नाते उन्होंने भोजन की गिरती गुणवत्ता के खिलाफ विद्रोह किया था।

फिर उनकी मुलाकात एएनसी के भावी नेता वाल्टर सिस्यूलू से हुई जो उस समय सेंट्रल जोहानिसबर्ग में एक एस्टेट एजेंसी चला रहे थे। वे उन्हें एक स्थानीय कानूनी फर्म में

लेकर गए। कार्यालय और सिस्यूलू के घर पर उनकी मुलाकात ब्लैक सोसाइटी के अन्य सदस्यों से हुई।

1944 में एएनसी यूथ लीग की स्थापना के साथ मंडेला पहली बार राजनीतिक मंच पर उभर कर आए। यह एएनसी का ही एक हिस्सा था जिसका उद्देश्य रंगभेद के खिलाफ आवाज़ बुलंद करना था। मंडेला एएनसी यूथ लीग के संस्थापक कार्यकारी सदस्य थे।

उसके बाद 1948 में अफ्रीकनेर नेशनलिस्ट पार्टी ने आम चुनाव पूरी तरह से जीता तथा दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की अपनी नीति लागू करना शुरू की। इसके जवाब में एएनसी ने सविनय अवज्ञा अभियान चलाने के लिए कम्युनिस्ट और एशियाई समूहों के साथ गठबंधन करना शुरू किया। तब तक यूथ लीग के ज़रिए एएनसी का जीर्णोद्धार हो चुका था। एएनसी के इस नए रूप के अध्यक्ष थे एल्बर्ट लुथुली और उपाध्यक्ष थे मंडेला । इसकी बढ़ती ख्याति को देखते हुए उसे पहली बार प्रतिबंधित करने का आदेश दिया गया।

मंडेला जो एलएलबी की अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ चुके थे, उस साल अगस्त में अब उसे पूरा कर वकील बने। उन्होंने ओलिवर तेम्बू के साथ मिलकर एक विधि फर्म स्थापित की। ओलिवर तेम्बू वे व्यक्ति थे जिन्होंने मंडेला के वर्षों तक जेल में रहने के बाद भी उनका साथ नहीं छोड़ा। लेकिन जहां दोनों वकीलों ने अपने राजनीतिक जीवन को बढ़ावा देने के लिए कानूनी जानकारी का उपयोग किया वहीं फरवरी 1955 में सोफिया शहर के जोहानिसबर्ग उपनगर में अश्वेत लोगों को हटाने से रोकने में पारंपरिक अभियान नाकाम होने से मंडेला इस बात के लिए मजबूर हुए कि एएनसी के पास इसका सशस्त्र प्रतिरोध करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है: 'स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वाला व्यक्ति अपने उत्पीड़क से सीखता है कि उसका संघर्ष कैसा होगा तथा फिर उत्पीड़ित व्यक्ति के पास पीड़ा देने वाले व्यक्ति के अंदाज़ में ही जवाब देने के अलावा और कोई विकल्प नहीं बचता'। एएनसी के नेतृत्व वाले गठबंधन कांग्रेस ऑफ द पीपल ने जून 1995 में इस तरह के राजनीतिक उद्देश्यों की ज़रूरत को अपने स्वतंत्रता चार्टर (संविधान) में परिभाषित किया।

इसे रोकने में पहले से ही कार्रवाई शुरू करते हुए सरकार ने दिसंबर 1956 में मंडेला और पार्टी के अन्य 155 कार्यकर्ताओं को चार्टर में साम्यवाद आंदोलन उपलक्षित करने का आरोप लगाकर गिरफ्तार किया। एक साल के उपरांत सुनवाई पूरी होने के बाद शेष 29 प्रत्यर्थियों के बरी होने तक वह एएनसी के विचारों की घोषाणा का मंच बन चुका था। फैसले के तुरंत बाद मंडेला भूमिगत हो गए। 'उन्हें ब्लैक पिंपर्नल' कहा जाने लगा क्योंकि भेष बदलने की उनकी क्षमता के कारण वे अधिकारियों को चकमा देने में कामयाब रहते थे। नए साल में मंडेला पहली

बार दक्षिण अफ्रीका से बाहर गए । आखिरकार अगस्त 1962 में घर वापस लौटते समय जब वे एक ड्राइवर के भेष में थे तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें अभियान को बढ़ावा देने के लिए तीन साल की सज़ा के अलावा पासपोर्ट के बिना देश छोड़ने के लिए 2 साल की कैद की सज़ा सुनाई गई। अक्तूबर 1963 में राइवोनिया सुनवाई के दौरान उन्हें 'सबसे बड़े अभियुक्त' के रूप में पेश किया गया। साथ ही तोड़-फोड़ करने के आरोप में गिरफ्तार किए गए एएनसी नेताओं पर भी सुनवाई हुई। 27 साल बाद 11 फरवरी 1990 को वे जेल से रिहा हुए।

नेल्सन मंडेला जिन्हें अक्सर 'अफ्रीकी गांधी' कहा जाता था, उनमें और भारत के राष्ट्रपिता में काफी समानताएं थी। रंगविरोधी आंदोलन के नायक मंडेला का भारत से एक विशिष्ट रिश्ता था और यह पूरे विश्व को तब देखने को मिला जब 27 साल जेल में बंद रहने के बाद उन्होंने भारत को अपने पहली विदेश यात्रा के लिए चुना। मंडेला महात्मा गांधी को अपना राजनीतिक गुरू और आदर्श मानते थे। 1990 में भारत यात्रा के दौरान उन्हें भारत के सर्वोच्च पुरस्कार 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। भारत में उनका अभूतपूर्व स्वागत किया गया तथा दिल्ली और मुम्बई में उनको सम्मानित किया गया। भारत रत्न से सम्मानित होने वाले वे पहले गैर-भारतीय थे। अफ्रीका के पहले अश्वेत राष्ट्रपति बनने के बाद जब मंडेला भारत आए तो वे गांधीजी के साबरमती आश्रम गए और उन्होंने कहा कि उन्हें ऐसा लग रहा है कि वे तीर्थयात्रा पर अपने घर आए हों।

1993 में शांति का नोबेल पुरस्कार, यूएस प्रेजिडेन्शियल मेडल फॉर फ्रीडम, सोवियत ऑर्डर ऑफ लेनी तथा भारत रत्न सहित उन्हें 250 से भी अधिक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

मंडेला ने बेशक 95 वर्ष की उम्र में हमें अलविदा कह दिया हो लेकिन उनकी विरासत और विचारधारा हमारे बीच हमेशा जीवंत रहेंगी।